Class 1
Hindi

चूहो! म्याऊँ सो रही है

काव्यांशों की व्याख्या

घर के पीछे, छत के नीचे,
पाँव पसारे, पूँछ सँवारे।
देखो कोई, मौसी सोई,
नासों में से, साँसों में से।
घर घर घर घर हो रही है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में कवि कहता है कि घर के पीछे तथा छत के नीचे, पाँव पसारे एवं पूँछ सँवारे बिल्ली सो रही है। बिल्ली मौसी की नाक और साँसों से घर-घर की आवाज़ आ रही है।

शब्दार्थ : पसारे-फैलाए। नास-नाक।

बिल्ली सोई, खुली रसोई,
भरे पतीले, चने रसीले।
उलटो मटका, देकर झटका,
जो कुछ पाओ, चट कर जाओ।
आज हमारा दूध दही है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

व्याख्या : कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि बिल्ली सो रही है और रसोईघर खुला पड़ा है। इसमें भरे हुए पतीले तथा रसीले चने रखे हैं। कवि चूहों से कहता है कि एक झटके में मटके को उलट दो तथा जो कुछ मिले, उसे चट कर जाओ। आज रसोईघर में रखा दूध-दही सब हमारा है। इसका कारण यह है कि बिल्ली सो रही है।

शब्दार्थ : पतीला-चौड़े मुँह की बटलोई। रसीला-रस से भरा हुआ। मटका-मिट्टी का बड़ा घड़ा।

मूंछ मरोड़ो, पूँछ सिकोड़ो,
नीचे उतरो, चीजें कुतरो।
आज हमारा, राज हमारा,
करो तबाही, जो मनचाही।
आज मची है, चूहा शाही,
डर कुछ भी चूहों को नहीं है,
चूहो! म्याऊँ सो रही है।

व्याख्या : कवि चूहों को ललकारते हुए कहता है कि अपनी मूंछे मरोड़कर, पूँछे सिकोड़कर नीचे उतरो और चीज़ों को कुतर डालो। आज तो केवल चूहों का ही राज है। आज चूहों को किसी का भी डर नहीं है, क्योंकि बिल्ली सो रही है।

शब्दार्थ : कुतरना-काटना। चूहा शाही-चूहों का राज।

प्रश्न-अभ्यास

पढ़ो

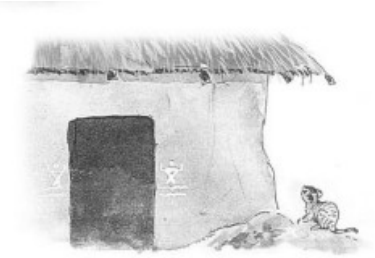

घर के पीछे,
छत के नीचे

पाँव पसारे,
पूँछ सँवारे

भरे पतीले,
चने रसीले

उलटा मटका,
देकर झटका

मूँछ मरोड़ो,
पूँछ सिकोड़ो

नीचे उतरो,
चीज़ें कुतरो

उत्तर :-सभी छात्र इन पंक्तियों को पढ़ने का प्रयास करें और बोल-बोलकर याद करें।

चलो, चूहा बनाएँ

तीन लिखो

मूँछ कान बनाओ

आँखें और पैर बनाओ

पूँछ बनाओ

उत्तर :-

तुक मिलाओ, आगे बढ़ाओ

उत्तर :-

सोई – खोई	पतीले - रसीले	मटका - झटका
पसारे - सँवारे	मरोड़ो - सिकोड़ो	उतारो - कुतरो